वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 328

पंच बालयति तीर्थंकर परिचय एवं पूजा

–प्रस्तुति –

पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र में आयोजित 'पंचबालयति तीर्थंकर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव' माघ शु. षष्ठी से माघ शु. दशमी, 29 जनवरी से 2 फरवरी 2012 के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404
फोन नं.- (01233) 280184, 280994
Website : www.jambudweep.org
E-mail : jambudweeptirth@gmail.com

प्रथम संस्करण	वीर नि.सं. 2538	मूल्य
2200 प्रतियाँ	माघ शु. दशमी, 2 फरवरी 2012	16/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशक एवं सम्पादक :–

स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी

–: प्रबंध सम्पादक :–

जीवन प्रकाश जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग - ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर ''महावीर धाम'' परिसर में नवनिर्मित पंचबालयति मंदिर के पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी पूज्य 105 गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा प्रस्तुत इस पुस्तक का प्रकाशन दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के अन्तर्गत संचालित वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला द्वारा करके हम प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं।

इस ग्रंथमाला द्वारा समय-समय पर छोटे-बड़े ग्रंथों का प्रकाशन सन् 1974 से चल रहा है और लाखों की संख्या में पुस्तकें प्रकाशित होकर जनमानस के लिए ज्ञान का स्रोत प्रवाहित कर रही हैं।

''पंचबालयति तीर्थंकर परिचय एवं पूजा'' नामक इस पुस्तक में पूज्य गणिनी माताजी और प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी ने गद्य-पद्य रचनाओं के माध्यम से हमारे पाँच तीर्थंकरों का इतिहास समाविष्ट कर दिया है, जो हम सभी के लिए परम उपयोगी है।

मंदिर निर्माण एवं पंचकल्याणक महोत्सव के पुण्यार्जक भाई महेशचंद जी एवं श्रीमती संतोष जैन, उनके पुत्रगण, पुत्रवधुएँ एवं समस्त परिवार के प्रति मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं कि वे इसी प्रकार से अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग धर्मकार्यों में करते हुए जैन समाज में आदर्श प्रस्तुत करते रहें और आप स्वस्थ-चिरायु होकर गुरुभक्ति में तत्पर रहें यही भगवान महावीर से प्रार्थना है।

श्री महेशचंद जी के नम्र निवेदन पर जम्बूद्वीप धर्मपीठ के पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी ने दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान को पंचकल्याणक महोत्सव का आयोजक बनाकर धर्मवात्सल्य का महान परिचय प्रदान किया है तथा आगे भी इस जिनमंदिर के संचालन में संस्थान के द्वारा पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया है अतः यह निःसंदेह कहा जा सकता है कि यह 'पंचबालयति मंदिर' महावीर जी तीर्थ की कीर्ति में चार-चाँद लगाएगा।

महोत्सव के सानंद सम्पन्न होने की मंगल भावना के साथ-साथ पंचबालयति भगवन्तों के श्रीचरणों में कोटिशः वन्दन करते हुए उन्हीं बालयतियों के पथ पर अग्रसर पंचकल्याणक में सान्निध्य प्रदाता बालब्रह्मचारी स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के प्रति भी वंदन करते हुए इस तीर्थ के पुनः पुनः दर्शन की भावना करत हूँ।

–जीवन प्रकाश जैन (प्रबंध सम्पादक)

राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका। सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा ''डी.लिट्.'' की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वततीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डलविधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभादेवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

पंचकल्याणक में सान्निध्य प्रदाता स्वस्तिश्री कर्मयोगी पीठाधीश रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी का परिचय

(1) जन्म–आपका जन्म ज्येष्ठ शुक्ला पंचमी (श्रुतपंचमी) को सन् 1950 में हुआ।

(2) जन्म स्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

(3) माता-पिता–माता मोहिनी देवी (आर्यिका श्री रत्नमती माताजी हुईं) एवं पिता श्री छोटेलाल जैन

(4) जन्म नाम–रवीन्द्र कुमार जैन

(5) शिक्षा–लखनऊ युनिवर्सिटी से बी.ए. तक अध्ययन

(6) भाई बहन–9 बहनें एवं 3 भाई

(7) त्याग की प्रेरणा–सन् 1968 में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा 2 वर्ष का ब्रह्मचर्य व्रत

(8) आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–सन् 1972 में आचार्य श्री धर्मसागर जी महाराज द्वारा, नागौर (राज.) में

(9) सप्तम प्रतिमा के व्रत एवं गृह त्याग–सन् 1987 में पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा

(10) दशम प्रतिमा एवं पीठाधीश पदारोहण के संस्कार–मगसिर कृष्णा दशमी, 20 नवम्बर 2011, पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा

(11) उपाधि अलंकरण–

– **'कर्मयोगी'** (सन् 1992 में अ.भा. दि. जैन शास्त्री परिषद द्वारा)

– **'धर्मसंरक्षणाचार्य'** (सन् 1996 में मांगीतुंगी-महा. में पंचकल्याणक के अवसर पर वीर सेवा दल द्वारा)

– **'संस्कृति संरक्षक'** (सन् 2006 में भट्टारकवृंद द्वारा)

– **'धर्मालंकार'** (सन् 1996, मांगीतुंगी में)

– **'संस्कृति सार्थवाह'** (12 जून 2010, जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर में आयोजित ज्ञान ज्योति विद्वत् प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर समस्त विद्वत्जनों द्वारा)

– **'तीर्थोद्धारक'** (30 नवम्बर 2011, औरंगाबाद-महा.में

(12) विदेश यात्रा–भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव वर्ष के अन्तर्गत सन् 2000 में न्यूयार्क-अमेरिका में आयोजित 'विश्वशांति शिखर सम्मेलन' में जैन धर्माचार्य के रूप में विशेष सहभागिता

(13) साहित्यिक अवदान–विगत 38 वर्षों से संस्थान द्वारा प्रकाशित की जाने वाली सम्यग्ज्ञान मासिक पत्रिका एवं वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला द्वारा प्रकाशित होने वाले ग्रंथों का सम्पादन कर प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में छपवाकर विशेष धर्मप्रचार में महत्वपूर्ण सहयोग।

(14) विशेष सौभाग्य–आपको पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी जैसी जैन समाज की सर्वोच्च साध्वी के लघु भ्राता होने का सौभाग्य प्राप्त है। साथ ही आपकी अन्य दो बहनें (आर्यिका श्री अभयमती माताजी एवं चंदनामती जी) भी आर्यिका व्रतों का अनुपालन करते हुए आत्मकल्याण एवं धर्मप्रभावना के कार्य कर रही हैं। इसके साथ ही सबसे महान सौभाग्य यह है कि आपकी जन्म प्रदात्री माँ ने भी आर्यिका दीक्षा धारण करके रत्नमती नाम प्राप्त किया और अपने मानव जीवन को सफल किया, ऐसी पूज्य महान आत्माओं के साथ आपका गृहस्थ संबंध होना अत्यन्त विशेष सौभाग्य एवं पुण्य का विषय है।

श्री महावीर जी अतिशय क्षेत्र से जुड़ा है एक वीरांगना का इतिहास

–प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी तीर्थ जहाँ लगभग 400 वर्षों से भगवान महावीर के अतिशयों से प्रसिद्धि को प्राप्त है, वहीं बीसवीं सदी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी साध्वी पूज्य गणिनी आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रथम क्षुल्लिका दीक्षा का इतिहास भी इस धरा से जुड़ा हुआ है। सन् 1953 में भारत गौरव आचार्य श्री देशभूषण महाराज ने टिकैतनगर (जि.-बाराबंकी-उ.प्र.) के लाला छोटेलाल और माँ मोहिनी की प्रथम सन्तान कु. मैना को 18 वर्ष की अल्पायु में उनके तीव्र वैराग्य को देखकर महावीर जी अतिशय क्षेत्र पर क्षुल्लिका दीक्षा देकर 'वीरमती' नाम प्रदान किया था।

अतिशय क्षेत्र की अतिशायि दीक्षा ने उनके त्यागमयी जीवन को इतना अतिशयकारी बना दिया कि राजस्थान की ही धरा माधोराजपुरा (जि.-जयपुर) में प्रथमाचार्य श्री शांतिसागर महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज के करकमलों से आर्यिका दीक्षा लेकर ज्ञानमती नाम प्राप्त होते ही इनके ज्ञान का अतिशय इतना वृद्धिंगत हो गया कि आज तक इन्होंने अपने 59 वर्षीय संयमी जीवन में साहित्य लेखन, तीर्थनिर्माण, जिनधर्मप्रभावना आदि अनगिनत कार्यकलापों के द्वारा जैन साधु जगत् में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित कर जिनवर एवं गुरुवर के गौरव को आकाश की ऊँचाईयों तक पहुँचाया है।

महावीर जी तीर्थ पर मूल मंदिर के अतिरिक्त यूँ तो अन्य अनेक मंदिर तथा ब्र. कृष्णाबाई और ब्र. कमलाबाई के द्वारा स्थापित महिला आश्रम भी हैं। इसके साथ यहाँ बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य श्री शान्तिसागर महाराज एवं उनके प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर महाराज की स्मृति में द्वितीय पट्टाधीश आचार्य श्री शिवसागर महाराज की प्रेरणा से निर्मित किये गये ''शांतिवीर नगर'' नामक तीर्थ परिसर में अनेक सुन्दर जिनालयों के साथ 28 फुट उत्तुंग भगवान शांतिनाथ की खड्गासन प्रतिमा विराजमान हैं। इस तीर्थ परिसर में पूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1998 में एक धातु निर्मित मन्दार चैत्यवृक्ष की स्थापना करके उसमें सिद्ध भगवान की 4 प्रतिमाएँ विराजमान की गई हैं।

पुनश्च वर्तमान में पूज्य माताजी के आशीर्वाद से उनके अनन्य भक्त श्री महेशचंद जैन-राजपुर रोड, दिल्ली वालों ने महावीर जी के ''महावीर धाम'' परिसर

में पंचबालयति मंदिर का निर्माण करके महान पुण्यकार्य सम्पादित किया है। उनकी भावना के अनुसार दिनाँक 29 जनवरी 2012 से 2 फरवरी 2012 (माघ शु. षष्ठी से दशमी) तक उन पंचबालयति तीर्थंकर भगवन्तों की प्रतिमाओं का पंचकल्याणक महोत्सव जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर के पीठाधीश स्वस्तिश्री रवीन्द्रकीर्ति स्वामी जी के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हो रही है। इसी शुभ अवसर पर यह ''पंचबालयति तीर्थंकर परिचय एवं पूजा'' नामक पुस्तक का प्रकाशन हो रहा है।

पूज्य गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी ने उत्तरपुराण ग्रंथ के आधार से इन पाँचों तीर्थंकरों का परिचय यहाँ अति संक्षेप में प्रस्तुत करके गागर में सागर भर दिया है तथा पाँचों तीर्थंकर की सुन्दर स्तुतियों में उनका पूरा जीवन चरित्र संजोकर सभी भक्तों को भक्ति में मग्न होकर भगवान के गुणानुवाद से असंख्य कर्मों की निर्जरा करने का सुअवसर प्रदान किया है। इसके साथ ही पूज्य श्री की प्रेरणा से मेरे द्वारा रचित ''पंचबालयति तीर्थंकर पूजा'' इसमें दी गई है, जिसे प्रतिदिन करके भक्तजन अपनी आत्मा को पूज्य बनाने का पुरुषार्थ करें, यही मंगल भावना है।

इस पुस्तक के माध्यम से आप सभी अपने 24 तीर्थंकरों में से पाँच बाल ब्रह्मचारी तीर्थंकरों की महिमा जानकर उनके गुणों की आराधना करें, यही इसकी सार्थकता होगी।

विषयानुक्रमणिका

	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	प्रथम बालयति तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान	8
2.	द्वितीय बालयति तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ भगवान	9
3.	तृतीय बालयति तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान	10
4.	चतुर्थ बालयति तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान	11
5.	पंचम बालयति तीर्थंकर श्री महावीर भगवान	12
6.	श्री वासुपूज्यजिन स्तुति	13
7.	श्री मल्लिनाथजिन स्तुति	13
8.	श्री नेमिजिन स्तुति	14
9.	श्री पार्श्वजिन स्तुति	15
10.	श्री वीरजिन स्तुति	16
11.	पंचबालयति तीर्थंकर पूजा	18
12.	पंचबालयति तीर्थंकर की आरती	24

-मंगलाचरण-

वासुपूज्यस्तथा मल्लिः, नेमिः पार्श्वोऽथ सन्मतिः।
कुमाराः पंच तीर्थेशा! भवद्भ्योऽनन्तशो नमः।।1।।

प्रथम बालयति

तीर्थंकर श्री वासुपूज्य भगवान

इस जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में अंग नामक देश में चम्पानगर है, जिसका राजा वसुपूज्य था और रानी जयावती थी। आषाढ़ कृष्णा षष्ठी के दिन रानी ने सोलह स्वप्नदर्शनपूर्वक गर्भ धारण किया और फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के दिन पुण्यशाली पुत्र को उत्पन्न किया। सौधर्म इन्द्र ने महान वैभव के साथ तीर्थंकर शिशु को ऐरावत हाथी पर बिठाकर सुमेरु पर्वत की पाण्डुकशिला पर ले गए, वहाँ उनका 1008 बड़े-बड़े कलशों से जन्माभिषेक करके जन्म उत्सव मनाकर पुत्र का 'वासुपूज्य' नामकरण किया। उस समय सौधर्म इन्द्र भगवान के दिव्य-अनुपम रूप को दो नेत्रों से देखकर तृप्त नहीं हुआ, तब उसने विक्रिया से 1008 नेत्र बना लिए।

जब कुमार काल के अठारह लाख वर्ष बीत गये तब संसार से विरक्त होकर भगवान जगत के यथार्थस्वरूप का विचार करने लगे। तत्क्षण ही देवों के आगमन हो जाने पर देवों द्वारा निर्मित पालकी पर सवार होकर मनोहर नामक उद्यान में गये और फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के दिन छह सौ छिहत्तर राजाओं के साथ स्वयं दीक्षित हो गये। छद्मस्थ अवस्था का एक वर्ष बीत जाने पर भगवान ने कदम्ब वृक्ष के नीचे बैठकर माघ शुक्ल द्वितीया के दिन सायंकाल में केवलज्ञान को प्राप्त कर लिया। भगवान बहुत समय तक आर्यखण्ड में विहार कर चम्पानगरी में आकर एक वर्ष तक रहे। जब आयु में एक माह शेष रह गया, तब योग निरोध कर रजतमालिका नामक नदी के किनारे की भूमि पर वर्तमान चम्पापुरी नगरी में स्थित मन्दारगिरि के शिखर को सुशोभित करने वाले मनोहर उद्यान में पर्यंकासन से स्थित होकर भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी के दिन चौरानवे मुनियों के साथ मुक्ति को प्राप्त हुए। ऐसे प्रथम बालयती भगवान वासुपूज्य हम सभी को चारित्र में दृढ़ रहने की शक्ति प्रदान करें।

द्वितीय बालयति
तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ भगवान

इस भरतक्षेत्र के बंगदेश में मिथिलानगरी के स्वामी इक्ष्वाकुवंशी 'कुंभ' महाराजा धर्मनीतिपूर्वक राज्य संचालन कर रहे थे। उनकी रानी का नाम 'प्रजावती' था।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा के दिन सोलहस्वप्नविलोकनपूर्वक रानी प्रजावती ने अहमिन्द्र देव को गर्भ में धारण किया और मगसिर सुदी एकादशी के दिन अश्विनी नक्षत्रमें पूर्ण चन्द्र सदृश पुत्र रत्न को जन्म दिया। सौधर्म इन्द्र ने समस्त देवों सहित महावैभव के साथ सुमेरु पर्वत पर तीर्थंकर बालक का जन्माभिषेक किया, अनन्तर 'मल्लिनाथ' नामकरण करके मिथिलानगरी में जाकर महामहोत्सवपूर्वक माता-पिता को सौंप दिया।

मल्लिनाथ तीर्थंकर की पचपन हजार वर्ष की आयु थी एवं पच्चीस धनुष ऊँचा सुवर्ण वर्णमय शरीर था। कुमार काल के सौ वर्ष बीत जाने पर एक दिन भगवान मल्लिनाथ ने देखा कि समस्त नगर हमारे विवाह के लिए सजाया गया है। सर्वत्र मनोहर वाद्य बज रहे हैं। उसे देखते ही उन्हें पूर्व जन्म के सुन्दर अपराजित विमान का स्मरण आ गया। वे विचार करने लगे कि कहाँ तो वीतरागता से उत्पन्न हुआ प्रेम और उससे प्रकट हुई मुक्ति और कहाँ सज्जनों को लज्जा उत्पन्न करने वाला यह विवाह ? उसी समय लौकांतिक देवों ने आकर भगवान की स्तुति की। अनन्तर सौधर्म आदि इन्द्रों ने देवों सहित आकर 'जयन्त' नामक पालकी पर भगवान को विराजमान किया और श्वेतवन के उद्यान में पहुँचे।

वहाँ पर भगवान ने मगसिर सुदी एकादशी के दिन अश्विनी नक्षत्र में सायंकाल के समय सिद्ध साक्षीपूर्वक बेला का नियम लेकर तीन सौ राजाओं के साथ संयम धारण कर लिया एवं अन्तर्मुहूर्त में ही मनःपर्ययज्ञान को प्राप्त कर लिया। तीसरे दिन पारणा के लिए आये, तब मिथिलानगरी के नंदिषेण राजा ने आहारदान देकर पंचाश्चर्य प्राप्त कर लिए।

छद्मस्थ अवस्था के छह दिन व्यतीत हो जाने पर भगवान ने बेला का नियम लेकर उसी श्वेतवन में अशोक वृक्ष के नीचे ध्यान लगाया। पौष वदी दूज के दिन अश्विनी नक्षत्र में प्रातःकाल चार घातिया कर्मों का नाश करके भगवान केवलज्ञानी हो गये। भगवान ने बहुत काल तक आर्यखंड में विहार किया।

एक मास की आयु के अवशेष रह जाने पर वे भगवान सम्मेदाचल पर पहुँचे। वहाँ पाँच हजार मुनियों के साथ योग निरोध किया और फाल्गुन शुक्ला पंचमी के दिन भरणी नक्षत्र में संध्या के समय लोक के अग्रभाग पर विराजमान हो गये। उसी समय देवों ने आकर भगवान का निर्वाणकल्याणक महोत्सव मनाया।

ऐसे उन्नीसवें तीर्थंकर श्री मल्लिनाथ भगवान की भक्ति नितप्रति हमारे रत्नत्रय की वृद्धि करे।

तृतीय बालयति
तीर्थंकर श्री नेमिनाथ भगवान

कुशार्थ देश के शौरीपुर नगर में हरिवंशी महाराजा समुद्रविजय अपनी महारानी शिवादेवी के साथ सुखपूर्वक धर्मनीति से राज्य संचालन करते थे।

कार्तिक शुक्ला षष्ठी के दिन रानी ने उत्तराषाढ़ नक्षत्र में सोलह स्वप्न-दर्शनपूर्वक गर्भ धारण किया पुनः नवमास बीतने पर श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन चित्रानक्षत्र में तीन ज्ञान के धारक भगवान का जन्म हुआ।

इन्द्रादि देवों ने जन्मोत्सव मनाकर तीर्थंकर शिशु का 'नेमिनाथ' नामकरण किया।

भगवान नेमिनाथ की आयु एक हजार वर्ष एवं शरीर दस धनुष ऊँचा था। प्रभु के शरीर का वर्ण नीलकमल के समान होते हुए भी इतना सुन्दर था कि इन्द्र ने एक हजार नेत्र बना लिए, फिर भी रूप को देखते हुए तृप्त नहीं हुआ था।

युवावस्था में माता-पिता ने भगवान नेमिनाथ का विवाह करने की इच्छा से जूनागढ़ के राजा उग्रसेन की कन्या राजमती का चयन किया। देवों द्वारा लाए गए नाना प्रकार के वस्त्राभूषणों से सुसज्जित भगवान नेमिनाथ को अपने विवाह के समय पशुओं के समूह को बंधा हुआ देखकर वैराग्य उत्पन्न हो गया। तत्क्षण ही लौकांतिक देवों से पूजा को प्राप्त हुए प्रभु को देवों ने देवकुरु नामक पालकी पर बिठाया और गिरनार पर्वत के सहस्राम्र वन में ले गये। श्रावण कृष्णा षष्ठी के दिन सायंकाल में तेला का नियम लेकर भगवान एक हजार राजाओं के साथ जैनेश्वरी दीक्षा से विभूषित हो गए, उसी समय उन्हें मनःपर्ययज्ञान प्रगट हो गया।

राजा वरदत्त ने प्रभु को प्रथम आहारदान देकर पंचाश्चर्यों को प्राप्त किया। इस प्रकार तपश्चर्या करते हुए आश्विन कृष्णा एकम् के दिन उन्हें लोकालोकप्रकाशी केवलज्ञान प्रगट हो गया। उनके समवसरण में वरदत्त आदि ग्यारह गणधर, अठारह हजार मुनि, राजीमती आदि चालीस हजार आर्यिकाएँ, एक लाख श्रावक और तीन लाख श्राविकाएँ थीं।

प्रभु नेमिनाथ ने छह सौ निन्यान्वे वर्ष, नौ महीना और चार दिन तक विहार करने के पश्चात् गिरनार पर्वत उसी सहस्राम्र वन में योग निरोध करके आषाढ़ शुक्ला सप्तमी के दिन अघातिया कर्मों का नाश करके मोक्षपद प्राप्त कर लिया। उसी समय इंद्रादि देवों ने आकर बड़ी भक्ति से प्रभु का निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया।

वे श्री नेमिनाथ भगवान हमारे अंतःकरण को पूर्ण शांति प्रदान करें।

चतुर्थ बालयति
तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ भगवान

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्रसंबंधी काशी देश में बनारस नाम का एक नगर है। उसमें महाराजा विश्वसेन राज्य करते थे। उनकी महारानी का नामा वामा देवी था। वैशाख कृष्णा द्वितीया को रानी ने गर्भ धारण किया पुनः नवमास व्यतीत होने पर पौष कृष्णा एकादशी के दिन पुत्र को जन्म दिया। इन्द्रादि देवों ने सुमेरु पर्वत पर ले जाकर तीर्थंकर शिशु का जन्माभिषेक करके 'पार्श्वनाथ' यह नामकरण किया था। प्रभु पार्श्वनाथ के शरीर की कांति हरितवर्ण एवं ऊँचाई नौ हाथ प्रमाण थी।

सोलह वर्ष की आयु में भगवान ने एक तापसी के द्वारा घायल किए गए सर्प-सर्पिणी को उपदेश दिया, जिसके प्रभाव से वे (सर्प-सर्पिणी) शांतभाव से मरकर बड़े ही वैभवशाली धरणेन्द्र और पद्मावती नामक देव-देवी हो गए।

अनन्तर तीस वर्ष की आयु में एक दिन अयोध्या के राजा जयसेन के द्वारा भेजी गई भेंट को स्वीकार करके भगवान पार्श्वनाथ ने उस दूत से अयोध्या की विभूति के बारे में पूछा। उत्तर में दूत ने सबसे पहले भगवान ऋषभदेव का वर्णन किया पुनः अयोध्या की दिव्यविभूति का विस्तार से वर्णन किया। उसी समय, "भगवान ऋषभदेव के समान मुझे भी तीर्थंकर प्रकृति का बंध हुआ है" ऐसा सोचते हुए भगवान पार्श्वनाथ गृहवास से पूर्ण विरक्त हो गए और लौकांतिक देवों द्वारा पूजा को प्राप्त हुए।

देवों द्वारा लाई विमलाभा पालकी पर बैठकर प्रभु अश्ववन में जाकर पौष कृष्णा एकादशी के दिन तीन सौ राजाओं के साथ दीक्षित हो गए। पारणा के दिन गुल्मखेट नगर के राजा धन्य ने प्रभु को आहारदान देकर पंचाश्चर्य प्राप्त किया।

छद्मस्थ अवस्था के चार मास बीतने पर भगवान वन में जाकर ध्यानलीन हो गए, उस समय कमठ के जीव शंबर देव ने पूर्व वैर के कारण सात दिन तक लगातार भयंकर उपसर्ग किया पुनः धरणेन्द्र और पद्मावती ने अवधिज्ञान से इस उपसर्ग को जानकर इसका निवारण किया तत्क्षण ही ध्यान के प्रभाव से प्रभु को चैत्र कृष्णा चतुर्थी के दिन दिव्य केवलज्ञान प्रगट हो गया। इन्द्रों ने समवसरण की रचना करके केवलज्ञानकल्याणक की पूजा की।

भगवान पार्श्वनाथ ने बारह सभाओं को धर्मोपदेश देते हुए पाँच मास कम सत्तर वर्ष तक विहार किया पुनः आयु के एक मास अवशेष रहने पर सम्मेदाचल के शिखर पर प्रतिमायोग से विराजमान हो गए अनन्तर श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन सिद्धपद को प्राप्त कर लिया।

ऐसे पार्श्वनाथ भगवान हमें भी सम्पूर्ण प्रकार के उपसर्गों को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

पंचम बालयति
तीर्थंकर श्री महावीर भगवान

जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के विदेहदेशसंबंधी कुण्डलपुर नगर (बिहार) में महाराजा सिद्धार्थ एवं महारानी प्रियकारिणी (त्रिशला) सुखपूर्वक राज्य करते थे। आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को महारानी त्रिशला ने सोलह स्वप्न देखे और पुष्पोत्तर विमान से अच्युतेन्द्र का जीव च्युत होकर रानी के गर्भ में आ गया।

सौधर्म इन्द्र ने बड़े वैभव के साथ सुमेरु पर्वत की पाण्डुक शिला पर भगवान का जन्माभिषेक करके "वीर" और "वर्धमान" ऐसे दो नाम रखे। भगवान वर्धमान की आयु बहत्तर वर्ष, ऊँचाई सात हाथ एवं शरीर का वर्ण स्वर्ण सदृश था।

एक बार संजय-विजय नामक चारण ऋद्धिधारी मुनियों को किसी विषय में संदेह उत्पन्न हो गया पुनः पालने में झूलते हुए भगवान का दर्शन करते ही उनकी शंका का समाधान हो गया तब उन्होंने उन्हें 'सन्मति' नाम प्रदान किया।

किसी समय संगम नामक देव ने सर्प बनकर परीक्षा ली और भगवान की वीरता से प्रभावित होकर उनका 'महावीर' नाम रखा। तीस वर्ष के बाद भगवान को पूर्व भव का स्मरण होने से वैराग्य हो गया। तब लौकान्तिक देवों द्वारा स्तुति को प्राप्त भगवान ने ज्ञातृवन में सालवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर ली और तत्काल मनःपर्यय ज्ञान प्राप्त कर लिया।

छद्मस्थ अवस्था के बारह वर्ष बाद जृंभिक ग्राम में ऋजुकूला नदी के किनारे मनोहर नामक वन में सालवृक्ष के नीचे वैशाख शुक्ला दशमी के दिन भगवान को केवलज्ञान प्राप्त हो गया। उस समय इन्द्र ने केवलज्ञान की पूजा की। भगवान की दिव्यध्वनि के न खिरने पर इन्द्र छ्यासठ दिन बाद राजगृही में विपुलाचल पर्वत पर गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति ब्राह्मण को युक्ति से लाये, तब उनका मान गलित होते ही वे भगवान से दीक्षित होकर मनःपर्ययज्ञान और सप्तऋद्धि से विभूषित होकर प्रथम गणधर हो गये, तब भगवान की दिव्यध्वनि खिरी। श्रावण कृष्ण एकम् के दिन दिव्यध्वनि को सुनकर गौतम गणधर ने सायंकाल द्वादशांग श्रुत की रचना की।

अंत में पावापुर नगर में सरोवर के बीच शिलापट्ट पर विराजमान होकर कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि को अंतिम प्रहर में स्वाति नक्षत्र में एक हजार मुनियों के साथ मोक्षपद को प्राप्त कर लिया, तब देवों ने मोक्षकल्याणक की पूजा कर दीपमालिका जलाई थी। तब से लेकर आज तक कार्तिक कृष्णा अमावस्या को दीपावली पर्व मनाया जाता है।

ऐसे पाँच नामों से संयुक्त भगवान महावीर हमारा और आप सभी का कल्याण करें।

श्री वासुपूज्यजिन स्तुति

आत्मा औ तनु के अन्तर को, कर तनु से निर्मम हो जाऊँ।
मैं शुद्ध बुद्ध परमात्मा हूँ, यह समझ स्वयं में रम जाऊँ।।
इन्द्रिय बल आयू श्वास चार, प्राणों को धर-धर मरता हूँ।
निश्चय नय से नहिं जन्म-मरण, फिर भी निश्चय नहिं करता हूँ।।1।।

मैं इन प्राणों से भिन्न सदा, पुद्गल से भिन्न निराला हूँ।
सुख सत्ता दर्शन ज्ञान वीर्य, चेतनमय प्राणों वाला हूँ।।
हे वासुपूज्य! तव चरण कमल की, भक्ती से यह मिल जावे।
जो खोई शक्ति अनन्त मेरी, तव नाम मंत्र से प्रगटावे।।2।।

चंपापुर में वसुपूज्य पिता, औ प्रसू जयावति इन्द्र नमित।
आषाढ़ वदी छठ को प्रभु ने, माँ गर्भ प्रवेश किया सुरनत।।
फाल्गुन वदि चौदस जन्म लिया, इस तिथि को ही जिनवेश धरा।
सित माघ द्वितीया में प्रभु को, केवल लक्ष्मी ने स्वयं वरा।।3।।

भादों सुदि चौदस को प्रभुवर, चम्पापुर से शिव धाम गये।
बाहत्तर लक्ष वर्ष आयू, दो सौ अस्सी कर तुंग कहे।।
कल्हार कमल छवि महिष चिन्ह, फिर भी तनुमुक्त अनन्तगुणी।
वासवगण पूजित वासुपूज्य! दो ज्ञानमती सम्पत्ति घनी।।4।।

श्री मल्लिनाथजिन स्तुति

जिन काम मोह यमराज मल्ल, तीनों को जीत विजेता हैं।
वे मल्लिजिनेश्वर मेरे भी, दुष्कर्म मल्ल के भेत्ता हैं।।
मिथिला नगरी के कुंभराज, औ प्रजावती मंगलकारी।
शुभ चैत्र सुदी एकम के दिन, था हुआ गर्भ मंगल भारी।।1।।

मगसिर सुदि ग्यारस में प्रभु को, सुरशैल शिखर पर ले जाके।
सुरदेवी सह इंद्रादिकगण, अभिषेक किया गुण गा-गा के।।
मगसिर सित ग्यारस दीक्षा ली, वदि पौष दूज ध्यानाग्नि जला।
सब घाति कर्म को भस्म किया, उस ही क्षण ज्ञान प्रभात खिला।।2।।

सौ हाथ देह काँचन कांती, थिति पचपन सहस वर्ष जानो।
मल्लिका कुसुम सम सुरभिततनु, शुभ कलश चिन्ह से पहचानो।।
फाल्गुन सित पंचमि तिथि आई, सम्मेदगिरी पर ध्यान धरा।
पंचमगति की लक्ष्मी आई, उसने प्रभु को था स्वयं वरा।।3।।

हे मल्लि प्रभो! मेरे त्रय विध, मल को हरिए निर्मल करिए।
मुरझाई सुखवल्ली मेरी, वचनामृत से पुष्पित करिये।।
मैं परमानंद सुखामृत के, झरने का अनुभव प्राप्त करूँ।
कैवल्य ज्ञानमति पूर्ण करो, निज का आह्लाद विकास करूँ।।4।।

श्री नेमिजिन स्तुति

भव वन में भ्रमते-भ्रमते अब, मुझको कथमपि विज्ञान मिला।
हे नेमि प्रभो! अब नियम बिना,नहिं जाने पावे एक कला।।
मैं निज से पर को पृथक् करूँ, निज समरस में ही रम जाऊँ।
मैं मोह ध्वांत का नाश करूँ, निज ज्ञान सूर्य को प्रकटाऊँ।।1।।

शौरीपुरि में प्रभु जन्में तक, रत्नों की वर्षा खूब हुई।
धन धन्य समुद्रविजय राजा, कृतकृत्य शिवा देवी भी थीं।।
कार्तिक सुदि छठ के गर्भागम, श्रावण सुदि छट्ठ जन्म लीना।
यौवन में राजमती के संग, परिजन ने ब्याह रचा दीना।।2।।

पशु बंधन को देखा प्रभु ने, तत्क्षण सब बंधन तोड़ दिया।
राजीमति मोह परिग्रह तज, तपश्री से नाता जोड़ लिया।।
श्रावण सुदि छट्ठ सुखद प्यारी, सिरसा वन में जा ध्यान धरा।
आश्विन सुदि एकम आते ही, कैवल्यश्री ने आन वरा।।3।।

तब राजमती भी दीक्षा ले, आर्या में गणिनी मान्य हुई।
प्रभु ने शिव का पथ दर्शाया, धर्मामृत वर्षा खूब हुई।।
तनु चालिस हाथ प्रमाण कहा, प्रभु आयू एक हजार वर्ष।
वैडूर्य मणी सम कांति अहो, प्रभु शंख चिन्ह से हैं चिन्हित।।4।।

प्रभु समवसरण में कमलासन पर, चतुरंगुल से अधर रहें।
चउदिश में प्रभु का मुख दीखे, अतएव चतुर्मुख ब्रह्मा हैं।।

प्रभु के विहार में चरण कमल तल, स्वर्ण कमल खिलते जाते।
बहु कोसों तक दुर्भिक्ष टले, षट् ऋतुज फूल फल खिल जाते।।5।।
तरुवर अशोक था शोक रहित, सिंहासन रत्न खचित सुन्दर।
छत्रत्रय मुक्ताफल लंबित, भामंडल भवदर्शी मनहर।।
सुरदुंदुभि बाजे बाज रहे, ढुरते हैं चौंसठ श्वेत चमर।
सुर पुष्पवृष्टि नभ से बरसे, दिव्यध्वनि फैले योजन भर।।6।।
आषाढ़ सुदी सप्तमि तिथि थी, प्रभु ऊर्जयंत से सिद्ध हुए।
श्रीकृष्ण तथा बलदेव आदि, तुम पूजें ध्यावें भक्ति लिए।।
हे भगवन्! तुम बाह्याभ्यंतर, अनुपम लक्ष्मी के स्वामी हो।
दो मुझे अनंतचतुष्टयश्री, ''सज्ज्ञानमती'' सिद्धिप्रिय जो।।7।।

श्री पार्श्वजिन स्तुति

भवसंकट हर्ता पार्श्वनाथ! विघ्नों के संहारक तुम हो।
हे महामना हे क्षमाशील! मुझमें भी पूर्ण क्षमा भर दो।।
यद्यपि मैंने शिवपथ पाया, पर यह विघ्नों से भरा हुआ।
इन विघ्नों को अब दूर करो, सब सिद्धि लहूँ निर्विघ्नतया।।1।।
वाराणसि नगरी धन्य हुई, धन धन्य हुए सब नर-नारी।
हे अश्वसेननंदन! तुम से, वामा माँ भी मंगलकारी।।
वैशाख वदी वह दूज भली, माता उर आप पधारे थे।
श्री आदि देवियों ने आकर, माता से प्रश्न विचारे थे।।2।।
शुभ पौष वदी ग्यारस तिथि थी, जब आए प्रभु साक्षात् यहाँ।
शैशव में सुर संग खेल रहे, अहियुग को दीना मंत्र महा।।
तब नागयुगल धरणेन्द्र तथा, पद्मावति होकर भक्त बने।
शुभ पौष वदी ग्यारस के दिन, प्रभु दीक्षा ले मुनि श्रेष्ठ बने।।3।।
तत्क्षण मनपर्ययज्ञानी हो, सब ऋद्धी से परिपूर्ण हुए।
इक समय सघन वन के भीतर, प्रभु निश्चल ध्यानारूढ़ हुए।।
कमठासुर ने उपसर्ग किया, अग्नी ज्वाला को उगल-उगल।
पत्थर फेंके मूसलधारा, वर्षायी आंधी उछल-उछल।।4।।

निष्कारण ही कमठासुर ने, दश भव तक बैर निकाला था।
प्रभु को दुख दे देकर उसने, खुद को दुर्गति में डाला था।।
प्रभु महासहिष्णू क्षमासिंधु, भव-भव से सहते आये हैं।
तन से ममता को छोड़ दिया, नहिं किंचित् भी घबराये हैं।।5।।
उस ही क्षण धरणीपति पद्मावति, आ करके बहु भक्ति किया।
प्रभु को मस्तक पर धारणकर, ऊपर से फण का छत्र किया।।
प्रभु क्षपक श्रेणि में चढ़ करके, मोहनी कर्म का नाश किया।
फिर शेष अघाती भी विघात, कैवल्यश्री को वरण किया।।6।।
पृथ्वी से बीस हजार हाथ, ऊपर पहुँचे अर्हन्त बने।
इन्द्रों के आसन कांप उठे, प्रभु समवसरण गगनांगण में।।
वदि चैत्र चतुर्थी तिथि उत्तम, जब प्रभु में ज्ञान प्रकाश हुआ।
उस स्थल का उस ही क्षण से, 'अहिच्छत्र' तीर्थ यह नाम हुआ।।7।।
नव हाथ देह सौ वर्ष आयु, मरकतमणि सम आभाधारी।
अहि चिन्ह सहित वे पार्श्वप्रभो! मुझको हों नित मंगलकारी।।
श्रावण सुदि सप्तमि तिथि के दिन, सिद्धीकांता से प्रीति लगी।
मैं नमूँ तुम्हें क्षण-क्षण पल-पल, मेरी हो केवलज्ञानमती।।8।।

श्री वीरजिन स्तुति

महावीर वीर सन्मति भगवन् ! अतिवीर सदा मंगल करिये।
हे वर्धमान! भव वारिधि से, अब मुझको पार तुरत करिये।।
वह कुंडलपुरि जग पूज्य हुई, सिद्धार्थ दुलारे जन्मे थे।
प्रियकारिणि माँ की गोदी में, त्रिभुवन के गुरुवर खेले थे।।1।।
आषाढ़ सुदी छठ पूज्य हुई, जब गर्भ में प्रभु अवतार लिया।
माता त्रिशला की सेवा का, सुर ललनाओं ने भार लिया।।
शुभ चैत्र सुदी तेरस का दिन, है धन्य धन्य वह सुखद घड़ी।
जब वर्द्धमान ने जन्म लिया, नभ से सुर पंक्ती उमड़ पड़ी।।2।।

प्रभु शैशव में अहिपति फण पर, चढ़कर संगम सुर जीता था।
नहिं ब्याह किया नहिं राज्य किया, जनता का मन भी फीका था।।
मगसिर वदि दशमी धन्य हुई, जब केशलोंच कीना तुमने।
नृपकूल ने प्रथम आहार दिया, पंचाश्चर्य किया देवों ने।।3।।

कौशाम्बी में चन्दनबाला, सिरमुंडित जकड़ी बेड़ी में।
प्रभु दर्शन से बेड़ियाँ झड़ीं, तनु सुंदर हुआ एक क्षण में।।
कोदों भोजन हो गया खीर, प्रभु को आहार दे धन्य हुईं।
यह महिमा तीर्थंकर प्रभु की, पंचाश्चर्यों की वृष्टि हुई।।4।।

अतिमुक्तक वन में ध्यान लीन थे, भव ने आ उपसर्ग किया।
तब अचलित प्रभु को देख स्वयं, भार्या सह पूजा भक्ति किया।।
वैशाख सुदी दशमी तिथि में, केवल रवि किरणें प्रकट हुईं।
शुभ समवसरण था रचा हुआ, दिव्यध्वनि फिर भी खिरी नहीं।।5।।

श्रावण श्यामा एकम उत्तम, गौतम गणधर जब आए हैं।
विपुलाचल पर ध्वनि प्रगट हुई, मुनिगण सुर नर हर्षाए हैं।।
हे वीर प्रभो! तव शासन में, मुझको रत्नत्रय निधी मिली।
मैं भक्ति सहित प्रणमूँ तुमको, मेरी मन कलियाँ आज खिलीं।।6।।

तनु सात हाथ कांचन कांति, आयू बाहत्तर वर्ष कही।
है चिन्ह मृगेन्द्र प्रभो! तेरा, जो ध्यावे पावे मोक्ष मही।।
कार्तिक वदि चौदस रात्रि अंत, आमावस का प्रत्यूष कहा।
सब कर्म नाश प्रभु मोक्ष गए, स्वात्मोत्थ सहज आनंद लहा।।7।।

पावापुरि के उपवन में जो, सरवर है कमल खिले उसमें।
प्रभु के निर्वाण कल्याणक से, अब तक भी कमल खिले सच में।।
देवों ने आकर पूजा की, महावीर प्रभू त्रिभुवनपति की।
अंधियारी में दीपक ज्वाले, तब से ही दीपावली हुई।।8।।

हे वीर प्रभो! मंगलमय तुम, लोकोत्तम शरणभूत तुम ही।
भव भव के संचित पाप पुँज, इक क्षण में नष्ट करो सब ही।।
मैं बारम्बार नमूँ तुमको, भगवन्। मेरे भव त्रास हरो।
''सज्ज्ञानमती'' सिद्धी देकर, स्वामिन् ! अब मुझे कृतार्थ करो।।9।।

पंचबालयति तीर्थंकर पूजा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

चौबिस तीर्थंकर जिनवर में से, पाँच बालयति कहलाये।
जो बालब्रह्मचारी बनकर, जिनधर्म प्रवर्तक कहलाये।।
श्रीवासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान पद प्रणमन है।
इन पंचबालयतिप्रभु की पूजन, हेतु यहाँ आह्वानन है।।1।।

ॐ ह्रीं पंचबालयतितीर्थंकरसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं पंचबालयतितीर्थंकरसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं पंचबालयतितीर्थंकरसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं

-अष्टक-

क्षीरोदधि का ले मधुर सलिल, कंचन कलशा परिपूर्ण भरा।
पूजन में त्रयधारा देकर, हो शान्त जन्म अरु मरण-जरा।।
श्री वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान को वन्दन है।
इन पंचबालयति की पूजन, आत्मा को करती पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन को जितना घिसते हैं, उतनी सुगंध वह देता है।
प्रभु पद में चर्चन करते ही, संसार ताप हर लेता है।।
श्री वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान को वन्दन है।
इन पंचबालयति की पूजन, आत्मा को करती पावन है।।2।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चावल को जल से धोने पर, वह शुद्ध धवल अक्षत बनता।
वह अक्षत प्रभु पद रखने से, मानव अक्षय पद को लभता।।
श्री वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान को वन्दन है।
इन पंचबालयति की पूजन, आत्मा को करती पावन है।।3।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

फूलों में फूल गुलाब-कमल, इनकी सुगंध नहिं छिपती है।
उन सुरभित पुष्पों से पूजन कर, कामव्यथा खुद नशती है।।

श्री वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान को वन्दन है।
इन पंचबालयति की पूजन, आत्मा को करती पावन है।।4।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लाडू बरफी पूरनपोली, पकवान्न बहुत खाये जाते।
पूजन में उन्हें चढ़ाने से, तन के क्षुधरोग विनश जाते।।
श्री वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान को वन्दन है।
इन पंचबालयति की पूजन, आत्मा को करती पावन है।।5।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मंदिर में घृत का दीपक ही, सुरभित प्रकाश फैलाता है।
उनसे प्रभु की आरति करके, मोहांधकार नश जाता है।।
श्री वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान को वन्दन है।
इन पंचबालयति की पूजन, आत्मा को करती पावन है।।6।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन कपूर की धूप अग्नि में, खूब जलाई जाती है।
कर्मों की ज्वाला प्रभु पूजन से, स्वयं शान्त हो जाती है।।
श्री वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान को वन्दन है।
इन पंचबालयति की पूजन, आत्मा को करती पावन है।।7।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर आम फल सेव आदि, खाकर इच्छा नहिं पूर्ण हुई।
पूजन में उसे चढ़ाकर शिवफल, की इच्छा परिपूर्ण हुई।।
श्री वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान को वन्दन है।
इन पंचबालयति की पूजन, आत्मा को करती पावन है।।8।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुअक्षत पुष्प चरू, दीपक व धूप फल थाल लिया।
'चन्दनामती' ले अर्घ्य थाल, जिनवर चरणों में चढ़ा दिया।।
श्री वासुपूज्य-मलि-नेमि-पार्श्व-प्रभु वर्धमान को वन्दन है।
इन पंचबालयति की पूजन, आत्मा को करती पावन है।।9।।

ॐ ह्रीं पंचबालयति तीर्थंकरेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

-दोहा-

स्वर्ण कलश में नीर ले, डालूँ जल की धार।
पंचबालयति के चरण, करूँ नमन त्रय बार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

बेला कमल गुलाब के, पुष्प सुगंधित लाय।
पंचबालयति को नमूँ, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

प्रत्येक अर्घ्य

चम्पापुर के युवराज प्रभो, श्री वासुपूज्य को नमन करूँ।
चौबिस जिनवर में प्रथम बालयति, के गुण को स्मरण करूँ।।टेक.।।

आषाढ़ कृष्ण छठ गर्भ तिथी, जन्मे फाल्गुन वदि चौदस में।
यह ही तिथि दीक्षा की व माघ-शुक्ला दुतिया केवली बने।।
है मोक्ष तिथी पावन भादों-शुक्ला चौदस को नमन करूँ।
चौबिस जिनवर में प्रथम बालयति, के गुण को स्मरण करूँ।।1।।

चौबिस जिनवर में एकमात्र, श्री वासुपूज्य तीर्थंकर हैं।
जिनके पाँचों कल्याणक से, पावन तीरथ चम्पापुर है।।
मैं अर्घ्य चढ़ा 'चन्दनामती', तीर्थंकर तीर्थ को नमन करूँ।
चौबिस जिनवर में प्रथम बालयति, के गुण को स्मरण करूँ।।2।।

ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाणकल्याणकसमन्वितप्रथमबालयतितीर्थंकर श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलापुरि के नृप कुंभराज, अरु प्रजावती सुत को वंदन।
श्री मल्लिनाथ प्रभु के चरणों में, अर्घ्य चढ़ाकर करूँ नमन।।टेक.।।

थी चैत्र सुदी एकम तिथि जब, जिनवर का गर्भकल्याण हुआ।
मगसिर सुदि ग्यारस जन्म व इस ही, तिथि में तपकल्याण हुआ।
तिथि पौष कृष्ण दुतिया मल्लि प्रभु, ने केवलश्री किया वरण।
श्री मल्लिनाथ प्रभु के चरणों में, अर्घ्य चढ़ाकर करूँ नमन।।1।।

फाल्गुन सुदि पंचमि मोक्षदिवस, सम्मेदशिखर से कर्म हना।
तीर्थंकर पंचकल्याणकयुत, देते भक्तों का काम बना।।

''चन्दनामती'' आतम सिद्धी की, इच्छा करता है यह मन।
श्री मल्लिनाथ प्रभु के चरणों में, अर्घ्य चढ़ाकर करूँ नमन।।2।।

ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाणकल्याणकसमन्वितद्वितीयबालयतितीर्थंकर-श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर प्रभु श्री नेमिनाथ को, अर्घ्य चढ़ाने आये हैं।
वे शौरीपुरि के नाथ तीसरे, बालयती कहलाये हैं।।टेक.।।

कार्तिक सुदि षष्ठी गर्भ बसे, श्रावण सुदि छठ को जन्म लिया।
श्रावण सुदि छठ को दीक्षा ले, वन सहस्राम्र को धन्य किया।।
राजुल को तज श्री ऊर्जयन्तगिरि, पर जा ध्यान लगाये हैं।
वे शौरीपुरि के नाथ तीसरे, बालयती कहलाये हैं।।1।।

आश्विन सुदि एकम ज्ञान, अषाढ़ सुदी सप्तमि शिवपद पाया।
''चन्दनामती'' त्रय कल्याणक से, ऊर्जयन्तगिरि महकाया।।
माँ शिवा देवि के नंदन को, हम अर्घ्य चढ़ाने आए हैं।
वे शौरीपुरि के नाथ तीसरे, बालयती कहलाये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाणकल्याणकसमन्विततृतीयबालयति-श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वनाथ प्रभु के चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
बालयती चौथे जिनवर के, पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं।।टेक.।।

वाराणसि नृप विश्वसेन, वामा माता को धन्य किया।
गर्भकल्याणक तिथि वैशाख, वदी दुतिया जगवंद्य किया।।
पौष कृष्ण ग्यारस को जन्म-तप, उत्सव इन्द्र मनाते हैं।
बालयती चौथे जिनवर के, पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं।।1।।

चैत्र वदी सुचतुर्थी को, अहिच्छत्र में केवलज्ञान हुआ।
गिरिसम्मेद से श्रावण शुक्ला-सप्तमि को निर्वाण हुआ।।
इसीलिए ''चन्दनामती'', हम पार्श्वनाथ गुण गाते हैं।
बालयती चौथे जिनवर के, पद में अर्घ्य चढ़ाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाणकल्याणकसमन्वितचतुर्थबालयति-श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महावीर प्रभू के पद में हम, श्रद्धा से अर्घ्य चढ़ाएंगे।
तीर्थंकर बालयती पंचम को, मन मंदिर में बिठाएंगे।।टेक.।।

आषाढ़ सुदी छठ गर्भ तिथी, सित चैत्र सुतेरस जन्म हुआ।
पितु सिद्धारथ माँ त्रिशला सह, पूरा कुण्डलपुर धन्य हुआ।।
मगसिर वदि दशमी दीक्षा ली, बोले नहिं ब्याह रचाएंगे।
तीर्थंकर बालयती पंचम को, मन मंदिर में बिठाएंगे।।1।।

वैशाख सुदी दशमी केवलज्ञानी बन अधर विहार किया।
कार्तिक कृष्णा मावस को पावापुरि से शिवपद प्राप्त किया।।
''चन्दनामती'' हम वीर प्रभू की, पूजा नित्य रचाएंगे।
तीर्थंकर बालयती पंचम को, मन मंदिर में बिठाएंगे।।2।।

ॐ ह्रीं गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान-निर्वाणकल्याणकसमन्वितपंचमबालयतितीर्थंकर-श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

जाप्यमंत्र-**ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यमल्लिनाथनेमिनाथपार्श्वनाथमहावीरपंचबाल-यतितीर्थंकरेभ्यो नमः।** (9, 27 अथवा 108 बार जपें)

जयमाला

जय जय जय चौबिस तीर्थंकर के, श्रीचरणों में करूँ नमन।
जय जय जय सिद्ध शिला पर राजित, सब जिनवर को करूँ नमन।।
जय वर्तमान के चौबिस जिन में, पंचबालयति को वन्दन।
जय पंचबालयति के पद में, जयमाला अर्घ्य करूँ अर्पण।।1।।
वसुपूज्य पिता माँ जयावती के, वासुपूज्य सुत कहलाए।
शत इन्द्र पूज्य प्रभु वासुपूज्य, बारहवें जिनवर बतलाए।।
आयू बाहत्तर लाख वर्ष, तनु लालवर्ण तीर्थंकर का।
था चिन्ह महिष सत्तर धनु ऊँचा, तन था प्रथम बालयति का।।2।।

मिथिलापुरि के युवराज मल्लिप्रभु, उन्निसवें तीर्थंकर हैं।
पचपन हज्जार वरष आयू, पच्चीस धनुष तनु तुंग कहे।।
है चिन्ह कलश तन स्वर्ण सदृश, स्वर्णिम आभा को फैलाते।
इन दुतिय बालयति की भक्ती, करके भाक्तिक जन हरषाते।।3।।

बाइसवें जिनवर नेमिनाथ का, श्यामवर्ण तन सुन्दर था।
निज ब्याह समय वैराग्य लिया, स्वीकार नहीं पशुबंधन था।।
आयू इक सहस वर्ष एवं, चालीस हाथ तन तुंग कहा।
श्रीकृष्ण तथा बलदेव पूज्य, प्रभु चिन्ह तुम्हारा शंख रहा।।4।।

तेइसवें तीर्थंकर पारस, उपसर्ग विजेता कहलाते।
सौ वर्ष आयु नौ हाथ काय, फण सर्प सहित जाने जाते।।
मरकतमणि के सम हरित कायायुत, सुन्दरता में अनुपम थे।
कमठासुर के कष्टों को सहने, में प्रभु तुम ही सक्षम थे।।5।।

महावीर वीर सन्मति एवं, प्रभु वर्धमान अतिवीर कहे।
इन पाँच नाम से युक्त जिनेश्वर, सात हाथ तनु तुंग रहे।।
आयू बाहत्तर वर्ष काय का, वर्ण स्वर्णसम मन भाया।
चन्दनबाला का कष्ट हरा, तीर्थंकर बन शिवपद पाया।।6।।

ये पाँचों तीर्थंकर जिनवर ही, पंचबालयति कहलाए।
हम ब्रह्मचर्य पालन हेतू, इन सबको निज मन में ध्याएँ।।
पूर्णार्घ्य चढ़ाकर चरणों में, 'चन्दनामती' यह अभिलाषा।
कब बालयती बन तप करके, पा जाऊँ शिवपुर का वासा।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य-मल्लिनाथ-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-महावीर पंचबालयति-तीर्थंकरेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

सोरठा- **बालयती जिनराज, पद की जो पूजा करें।**
पाकर निज साम्राज, अतुल ऋद्धि सिद्धी वरें।।

।।इत्याशीर्वादः, पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

पंचबालयति तीर्थंकर की आरती

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

तर्ज-झुमका गिरा रे.....

आरति करो रे,
श्री पंचबालयति तीर्थंकर की आरति करो रे।।टेक.।।

ऋषभदेव से महावीर प्रभु तक चौबिस तीर्थंकर हैं।
उनमें से ही पाँच तीर्थंकर बालब्रह्मचारी प्रभु हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो,
श्री पंचबालयति तीर्थंकर की आरति करो रे।।1।।

प्रथम बालयति वासुपूज्य चम्पापुरि के अधिनायक हैं।
दुतिय बालयति मल्लिनाथ मिथिलापुरी के युवराज कहे।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो,
उन तीर्थ और तीर्थाधिनाथ की आरति करो रे।।2।।

बाल ब्रह्मचारी तृतीय श्री नेमिनाथ कहलाते हैं।
शौरीपुर में जन्म लिया गिरनार से शिवपद पाये हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो,
माँ शिवादेवि के प्रिय नंदन की आरति करो रे।।3।।

पार्श्वनाथ तीर्थंकर चौथे बालयती प्रभु माने हैं।
पंचम बालयती जिनवर तीर्थंकर वीर बखाने हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो,
कुण्डलपुर के अधिनायक प्रभु की आरति करो रे।।4।।

पंचबालयति की आरति से भव आरत नश जाते हैं।
ब्रह्मचर्य से आत्मशक्ति ''चन्दनामती'' नर पाते हैं।।
आरति करो, आरति करो, आरति करो,
पाँचों तीर्थंकर बालयती की आरति करो रे।।5।।